2017

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय | विषय कोड

[redacted]

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक: 2321205

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: 2 7 2 1 3 3 8 9 4

शब्दों में

[redacted]

नीचे दिये गये उदाहरण के अनुसार रोल नम्बर भरें

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

→ क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में ____ शब्दों में ____

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 06

ग – परीक्षा का दिनांक 01 | 03 | 2017

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा **केन्द्र क्रमांक-212…**
हायर सेकण्डरी सर्टी० परीक्षा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

→ प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
D. S. Bhalekar 9340535	रमा कुशवाह 9340600

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक	(अंकों में)
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			

कुल प्राप्तांक शब्दों में	कुल प्राप्तांक अंकों में

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (1) के उत्तर

(1) :- (iii) वर्षा।

(2) :- (iv) नौ वर्ष।

(3) :- (ii) कानपुर।

(4) :- (iv) चौबिस।

(5) :- (i) वसन।

प्रश्न क्रमांक (2) के उ०

(अ) :- तानपान।

(ब) :- असहमत।

(स) :- साधु।

(द) :- सफलता होना।

(इ) :- जुगुप्सा।

BSE

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (3) के उ०

(अ) भय हमारे सामने साध्य व असाध्य रूपों में सामने आता है।

(ब) विश्वास में विष घोलने का काम घनानंद जी की प्रेयसी सुजान ने किया था।

(स):- देश-सेवा कविता पर लेखक रामकुमार ~~वष~~ वर्मा को 51 रु. का पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

(द):- मालवी बोली प्रमुख रूप से मध्यप्रदेश के इन्दौर, रतलाम व देवास जिलों में बोली जाती है।

(इ):- विशेषोक्ति अलंकार।

प्रश्न क्रमांक (4) का उ.

(क)	(ख)
(अ) मंगल वर्षा :-	भवानी प्रसाद मिश्र।
(ब) तुम यहाँ आओ :-	आज्ञावाचक।
(स) पंचवटी :-	खण्डकाव्य।
(द) रंगोली :-	शिवप्रसाद सिंह।
(ई) छोटे-छोटे सुख :-	रामदरश मिश्र।

P.T.O. continue

BSJ

DARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMAD

प्रश्न क्रमांक (5) का उ०

(अ) :- सत्य।

(ब) :- सत्य।

(स) :- असत्य।

(द) :- असत्य।

(इ) :- सत्य

प्रश्न क्रमांक (6) का उ०

(अथवा)

कबीरदास जी ने शब्द की महिमा बताते हुए कहा हैं, कि शब्द तो निराकार होते हैं, अर्थात् शब्द के हाथ-पैर नहीं होते हैं। कबीरदास जी कहते हैं किसी के प्रेम प्रति बोले गये शब्द (मीठे शब्द) जहाँ औषधि का कार्य करते हैं, तो वहीं दूसरी ओर कड़वे शब्द बड़े-बड़े घाव दे जाते हैं, अतः हमें अपने मुख से शब्द सम्भालकर बोलना चाहिए।

प्रश्न क्रमांक (7) का उ.

धरती और बसंत का आपस में वैसा ही नाता है, जिस प्रकार मानव और मानवता का आपस में संबंध होता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (8) का उ.

(अथवा)

कवि वीरेन्द्र मिश्र ने भारतमाता की जय-जयकार का आह्वान भारतीय सपूतों, देशज मित्रों, श्रमकर्ताओं, रचनाकारों तथा ग्रह-नक्षत्रों (आम जनता) से किया है।

प्रश्न क्रमांक (10) का उ.

(अथवा)

विभावरी के बीतने ऊषा नागरी आकाश रूपी पनघट में तारों रूपी घड़ो को डुबा रही है, अर्थात् सूर्य अस्तप्राय है, और आकाश में तारे धीरे-धीरे विलीन हो रहे हैं।

प्रश्न क्रमांक (11) का उ.

गजाधर बाबू ने रेलवे की नौकरी के पैंतीस वर्ष अकेले रहकर ही व्यतीत किये थे, अतः रिटायर होकर घर जाने की खुशी उन्हें थी किंतु रेलवे के जिस क्वार्टर में उन्होंने 35 वर्ष बिताये थे, वहाँ के चिर-परिचित स्नेह-आनंदमय सहज संसार से उनका नाता टूटने तथा क्वार्टर से सामान हट जाने से क्वार्टर की कुरूपता को देखकर उनका मन एक प्रकार के विषाद (दुख) का अनुभव कर रहा था।

प्रश्न क्रमांक (12) का उ.

अध्यक्ष को गम्भीर किस्म का प्राणी कहा गया है, क्योंकि उसमें यह भ्रम बनाये रखने की शक्ति होती है कि वह गम्भीर व मनहूस किस्म का प्राणी है। इसीलिए अध्यक्ष को गम्भीर किस्म का प्राणी कहा गया है।

P.T.O. continue —

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRA

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (13) का उ०

जिस समय पांडव अज्ञातवास पर थे उस समय कौरवों ने उत्तर कुमार की गायों का हरण करने का प्रयास किया तब अर्जुन ने उत्तर कुमार का सारथी बनकर अकेले ही भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य व सूर्यपुत्र करण के दाँत खट्टे कर दिये थे।

प्रश्न क्रमांक (14) का उ.

देवकी की गोद में एक छोटा-सा श्याम वर्ण बाल बालक अर्थात् बालक कृष्ण मचल रहे थे।

प्रश्न क्रमांक (16) का उ.

माधुर्य गुण :- जब किसी काव्य के पढ़ने या सुनने से आत्मा द्रवित हो जाये, मन खिल उठे तथा कानों में मधु घुल जाये तो वह माधुर्य गुण सम्पन्न रचना होती है।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (17) का उ.

उत्तराखण्ड के चारों धाम निम्न चार पवित्र नदियों के किनारे बसे हैं: -

धाम का नाम		नदी का नाम
(1) यमुनोत्री	→	यमुना नदी के किनारे।
(2) गंगोत्री :	→	गंगा नदी के किनारे।
(3) केदारनाथ	→	मंदाकिनी नदी के किनारे।
(4) बद्रीनाथ	→	अलकनन्दा नदी के किनारे।

B S E

प्रश्न क्रमांक (18) का उ.

अथवा

विभावना अलंकार : -

(1) परिभाषा: - जहाँ पर कारण के अभाव में भी कार्य पूर्ण हो जाए वहाँ पर विभावना अलंकार होता है।

(2) उदाहरण: -

बिनु पद चलै, सुनै बिनु काना,
कर बिनु करै करम विधि नाना।
आनन रहित, सकल रस भोगी,
बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी ॥

P.T.O. Continue - -

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (20) का उ०

(अथवा)

प्रगतिवाद की 4 विशेषताएँ निम्न हैं :-

(1) शोषकों के प्रति विद्रोह एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति के भाव :- इस काल के कवियों ने किसानों, गरीबों आदि पर पूँजीपतियों द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों के प्रति विद्रोह के भाव प्रगट किये हैं, तथा शोषित वर्ग ~~के प्रति~~ सहानुभूति के ~~प्रति~~ के भाव व्यक्त किये थे।

(2) आर्थिक व सामाजिक समानता पर बल :- प्रगतिवादी कवियों ने आर्थिक व सामाजिक समानता पर बल देते हुए, समाज में व्याप्त उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग के अंतर को समाप्त करने पर बल दिया गया है।

(3) सामाजिक यथार्थ का चित्रण :- प्रगतिवादी कवियों व्यक्तिगत सुख-दुख के भावों की अपेक्षा समाज में व्याप्त गरीबी, अकाल, भुखमरी, बेरोजगारी आदि सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति पर बल दिया है।

(4) प्रतीकों का प्रयोग :- इस काल के कवियों ने अपने भावों की स्पष्ट अभिव्यक्ति हेतु प्रतीकों का प्रयोग किया है।

(5) ईश्वर के प्रति अनास्था :- प्रगतिवादी कवियों ने ईश्वर के प्रति अनास्था के भाव व्यक्त किये हैं, वे ईश्वरीय शक्ति की तुलना में मानवीय शक्ति को ज्यादा महत्व देते हैं।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ का अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश
SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (21) का उ.

कहानी व उपन्यास में प्रमुख अंतर निम्न है :-

क्र.	कहानी	उपन्यास
(1)	कहानी में जीवन की किसी एक घटना का वर्णन होता है।	(1) उपन्यास में जीवन के वृहद रूप को दर्शाया जाता है।
(2)	कहानी में पात्रों की संख्या सीमित रहती है।	(2) उपन्यास में पात्रों की भरमार होती है।
(3)	इसका आकार लघु होता है।	(3) इसका आकार वृहद (विस्तृत) होता है।
(4)	कहानी कम समय में सघन प्रभावी होती है।	(4) उपन्यास का प्रत्येक मोड़ सघन प्रभावी नहीं होता है।
(5)	उदा.- पंच परमेश्वर।	(5) उदा. कर्मभूमि।

प्रश्न क्र. (9) का उ.

मीरा को हरि से मिलने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मीरा के प्रभु श्रीकृष्ण के महल की ओर जाने वाले चारों रास्ते बंद हैं, उनके महल को जाने वाला रास्ता अत्यंत दुर्गम व कठिनाइयों से परिपूर्ण है। चूँकि मीरा के प्रभु महाराज हैं, अतः उनकी रक्षा के लिए जगह-जगह पहरेदार लगे हुए हैं, जो बीच में ही मीरा का रास्ता रोक लेते हैं। जगह-जगह चोरों तथा लुटेरों का भय है, अतः मीरा को अपने प्रभु से मिलने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

P.T.O.

OFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (19) का उ.

भाषा और बोली में प्रमुख अंतर निम्न है: –

क्र	भाषा	बोली
(1)	भाषा, बोली का विस्तृत रूप है।	(1) बोली, भाषा की लघुत्तम इकाई है।
(2)	भाषा का क्षेत्र विस्तृत व व्यापक होता है।	(2) बोली का क्षेत्र सीमित होता है।
(3)	इसमें लिखित साहित्य पाया जाता है।	(3) इसमें लिखित साहित्य का अभाव होता है, इसमें केवल मौखिक साहित्य पाया जाता है।

BSE

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHO

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (22) का उ.

तुलसीदास जी

(1) रचनाऐं :- (i) कवितावली।
(ii) दोहावली।
(iii) रामचरितमानस।
(iv) विनय-पत्रिका।

भावपक्ष :-

(अ) भक्तिभाव :- तुलसीदास जी भगवान राम के अनन्य भक्त थे, तुलसीदास जी ने अपने काव्य में अनेक रचनाओं का सृजन अपने इष्ट भगवान राम को आधार मानकर किया है। आपकी भक्ति भगवान राम के प्रति सेव्य-सेवकभाव की है।

(ब) समन्वयवादी दृष्टिकोण :- तुलसीदास जी समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाने वाले कवि थे, रामभक्त होते हुए अपने अन्य देवी-देवताओं की भी वंदना की है।

(स) लोकहित :- तुलसीदास जी की भक्ति लोकमंगल की भावना से प्रेरित है।

(द) रस योजना :- तुलसीदास जी रस सिद्ध कवि थे। आपने अपने काव्य में शांत, वीर तथा श्रृंगार रसों को मुक्त हृदय से अपनाया है।

कलापक्ष :-

(i) भाषा :- तुलसीदास जी ने अपने काव्य की रचना प्रमुख रूप से ब्रज व अवधी भाषा में की है, किन्तु आपके काव्य की भाषा अवधी अवधी है।

P.T.O.

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

(ब) शैली :- तुलसीदास जी ने अपने काल में प्रचलित सभी शैलियों का अपने काव्य में प्रयोग किया है।

(स) अलंकार :- आपके काव्य में उपमा, रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलंकारों का सहज विन्यास देखने को मिलता है।

(द) छंद :- आपकी छंद योजना अद्वितीय है। आपने रामचरित मानस में दोहा छंदों तथा कवितावली में सवैया छंदों का मनोहारी वर्णन किया है।

साहित्य में स्थान :- तुलसीदास जी लोक कवि हैं, आपके काव्य से जीने की कला सीखी जा सकती है। आप हिन्दी पद्य साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवियों में सुविख्यात है।

BSE

प्रश्न क्रमांक (23) का उ.

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

रचनाऐं :- (1) चिंतामणि।
त्रिवेणि
रस-मीमांसा।

भाषा :- शुक्ल जी की भाषा परिष्कृत, परिमार्जित शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। आपकी भाषा में सौष्ठव है। आपकी भाषा मे व्यर्थ का शब्डाम्बर देखने को नहीं मिलता है, आपने व्यवस्थित तथा पूर्ण व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग किया है, जिससे आपकी भाषा में कहीं भी शिथिलता देखने को नहीं मिलती है। भाषा की इसी कसावट के कारण उसमें समास शक्ति पायी जाती है। कहीं-कहीं तो भाषा सूक्तिमयी बन जाती है. जैसे- बैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

शैली:- शुक्ल जी अपनी शैली के स्वयं निर्माता हैं। आपकी शैली प्रमुख रूप से समास शैली के रूप से प्रारम्भ होकर व्यास शैली के रूप में समाप्त होती है अर्थात आप एक विचार को सूत्र रूप में कहकर पुनः उसकी व्याख्या कर देते हैं। आपने प्रमुख रूप से 4 प्रकार की शैलियों को अपनाया है जो निम्न हैं:-

(1) गवेषणात्मक शैली (2) समीक्षात्मक शैली (3) भावात्मक शैली तथा (4) हास्य व्यंग्य एवं विनोदपूर्ण शैली।

साहित्य में स्थान:- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने अपनी असाधारण प्रतिभा द्वारा साहित्य की अनेक विधाओं में सृजन किया है। आप एक प्रमुख निबंधकार, साहित्यकार एवं इतिहासकार थे किंतु आपको हिंदी साहित्य के कालजयी समीक्षक के रूप में याद किया जाता है।

प्रश्न क्रमांक (24) का उ.

उसका प्रकाश तो ....

.... रोका जा सकता है।

संदर्भ:- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाती के "तिमिर गेह में किरण आचरण" नामक पाठ से उद्धृत है, इसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दुबे जी हैं।

प्रसंग:- प्रस्तुत गद्यांश में 'सृजन के प्रकाश' का महत्व प्रतिपादित किया गया है।

व्याख्या:- उपरोक्त गद्यांश के माध्यम से डॉ. श्यामसुन्दर दुबे जी कहना चाहते हैं कि हमारी अन्तरात्मा में जो प्रकाश (सृजन का प्रकाश) छिपा हुआ है, उससे मनुष्य सम्पूर्ण संसार को प्रकाशित कर सकता है।

कृपया पृष्ठ पलटें - जारी है

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

लेखक कहता है, यदि मनुष्य का आचरण उत्तम हो वह श्रमशील हो तथा मानवता की भावना से परिपूरित हो तो ऐसा मनुष्य जिसको छू ले वो प्रकाशित हो जाये। ऐसा मनुष्य अंधेरों को हटाते हुए संसार में प्रकाश का झरना बहा देगा। जिस प्रकार ज्वारों के और गेहूं के पौधों अंधेरे का सामना करते हुए प्रकाश का झरना बहाते हैं वे यही संदेश हमें देते हैं। गेहूं की जिजीविषा देखिए वह तो अंधेरे कमरों में भी विकास के सोपान गढ़ता है।

विशेषः- (1) लेखक ने सृजन के प्रकाश का महत्व दर्शाया है।
(2) नव निर्माण का संदेश निहित है।
(3) भाषा परिष्कृत एवं परिमार्जित है।

प्रश्नांक (25) का उ.

अथवा

बड़े न हूजे ....
.... गढ़ो न जाय

संदर्भः- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तिका स्वाति के दोहे नामक पाठ से लिया गया है, इसके रचयिता बिहारी लाल जी है।

प्रसंगः- उपरोक्त पद्यांश में ~~दर्शाया~~ उदाहरणों के माध्यम से दर्शाया गया है कि गुणों के बिना कोई सम्मान का पात्र नहीं होता है।

व्याख्याः- ~~कबीर~~ बिहारीलाल जी ने गुणों के बारे में कहते हुए कहा है कि कोई भी व्यक्ति या वस्तु गुणों के अभाव में सम्मान का पात्र नहीं होता है। उक्त कथन को कवि उदाहरण द्वारा स्पष्ट करता है, कि जिस प्रकार धतूरे और स्वर्ण दोनों से कनक कहा जाता है लेकिन धतूरे से स्वर्ण की भाँति गहने नहीं बनाये जा सकते है।

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

न क्र.

काव्य सौंदर्य :-

(1) गुणों की महत्ता को दर्शाया गया है।

(2) उदाहरणों द्वारा व्याख्यान का स्पष्टीकरण है।

(3) अलंकारों का सुन्दर वर्णन है।

प्रश्न क्रमांक (27) का उ.

(अ) :- पर्व :- भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग।

(ब) :- जीवन प्रवाह को सही दिशा देने वाले पर्व हैं।

(स) :- सारांश :- भारतीय संस्कृति में पर्व अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। पर्वों के बिना भारतीय संस्कृति अधूरी है। पर्व रिश्तों में मधुर रस घोलकर प्रेम व सद्भावना की भावना जगाते हैं। पर्व ही हमें ऐसा अवकाश प्रदान करते हैं जब हम अपने जीवन के विषय में अच्छा सोच सकते हैं।

अथवा

प्रश्न क्रमांक (15) का उ.

(अ) अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना :- अपने मुँह से अपनी प्रशंसा करना।

वाक्य प्रयोग :- राम ने राजेश की थोड़ी सी प्रशंसा क्या कर दी वह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने लगा।

(ब) दाँत खट्टे करना :- पराजित करना।

वाक्य प्रयोग :- अर्जुन ने अकेले ही उत्तर गो ग्रहण के समय भीष्म पितामह, द्रोण व कर्ण के दाँत खट्टे कर दिये थे।

P.T.O.

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (27) का उ.

प्रति
श्री सचिव महोदय,
माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र.
भोपाल (म.प्र.)

विषय:- कक्षा 12 वी की अंकसूची की द्वितीय प्रति मँगवाने हेतु।

महोदय
विनम्र निवेदन है, कि मैंने माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली बोर्ड परीक्षा वर्ष 2014-15 में राजकीय उ.मा.वि. टीकमगढ़ द्वारा अनुक्रमांक 26102256 के साथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी, जिसका प्रमाण पत्र एवं अंकसूची मुझे मिल गयी थी, लेकिन दुर्भाग्यवश मेरी अंकसूची कहीं खो गयी है। मैंने अनेक स्थानों पर नौकरी के लिए आवेदन प्रस्तुत किये है।

अत: महोदय जी से विनम्र निवेदन है, कि मेरी अंकसूची की द्वितीय प्रति भेजने की कृपा करें।

मेरा विवरण निम्नानुसार है -

नाम - अ.ब.स.।
कक्षा - 12वी.
रोल न. -
केन्द्र क्र.

सधन्यवाद

निवेदक
अ.ब.स

दिनाँक - 1/03/2017

B
S
E

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (28) का उ.

भारतीय समाज में नारी का महत्व :

(अ) विस्तृत रूपरेखा : -

* प्रस्तावना।
* प्राचीनकालीन नारी।
* मध्यकालीन नारी।
* आधुनिक कालीन नारी।
* पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव।
* भारतीय नारी के विशेष गुण
* उपसंहार

नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत पग-पग तल में
पीयूष स्त्रोत से बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।

प्रस्तावना - नारी सृष्टि की आधारशिला है, उसके बिना हर रचना अधूरी तथा हर कला रंगहीन है। वह पुरुष की माता भी है, सहचरी भी, प्रेमिका भी और सहयोगिनी भी। वह मधुर होते हुए भी पृथ्वी जैसी सहनशीलता, समुद्र जैसा गांभीर्य तथा सूर्य से तेज दृष्टिगोचर है। जिस प्रकार तार के बिना वीणा और धुरी के बिना पहिया बेकार होता है, उसकी प्रकार नारी के बिना मनुष्य का सामाजिक जीवन अधूरा है।

प्राचीनकालीन नारी : - प्राचीन काल (वैदिक काल) में नारी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। वह सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक क्षेत्रों में पुरुषों के साथ मिलकर कार्य करती थी। रोमशा, लोपामुद्रा आदि नारियों ने ऋग्वेद में स्त्रोतों की रचना की।

P.T.O.

B
S
E

RDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

मध्यकालीन नारी : . मध्यकाल में नारी शोषित हो गयी वह केवल पुरुषों के रंग रंग का साधन बनकर रह गयी। मुस्लिम युग में नारियों पर और भी बंधन लाद दिये गये क्योंकि विदेशियों की दृष्टि किसी देश की धन सम्पदा के साथ वहाँ की नारियों पर भी रहती थी। अतः नारियों को बलात्कार, आदि से बचाने के लिए पर्दा प्रथा का प्रचलन हुआ। मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है —

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

आधुनिक नारी : . आधुनिक काल नारी के जागरण एवं उद्धार का काल रहा। बंगाल में राजा राममोहन राय व उत्तर भारत में दयानंद सरस्वती ने नारी स्वतंत्रता का बिगुल बजाया। आधुनिक युग में युग-युग की दासता से पीड़ित नारी के प्रति सहानुभूति अपनायी जाने लगी। सुमित्रानंदन पंत ने नारी स्वतंत्रता की माँग की है।

मुक्त करो नारी को मानव चिर बंदिनी नारी को
युग-युग की निर्मम कारा से जननी सखी प्यारी को।।

BSE

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव :- पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंगकर भारतीय नारी तितली बनकर उड़ रही है वह अपने कर्तव्यों से विमुख हो गयी है। जिसके फलस्वरूप परिवारों का विघटन हो रहा है। आज नारी अपने परिवारों से विमुख हो गयी है आज उसे आवश्यकता है कि वो परिवारों से विमुख न हो

उपसंहार :- सभी पुराणों उपनिषदों में नारी की महिमा अक्षुण्ण है। वैदिक काल में शिव की कल्पना भी अर्द्ध-नारीश्वर रूप में हुई है। भारतीय ऋषि मनु ने कहा है जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं तथा जहाँ नारियों का अनादर होता है, वहाँ देवता एक क्षण भी नहीं ठहरते हैं।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

कृपया पृष्ठ पलटें ——— जारी है

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYA

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 28

(ब) का उ.

अनुशासन का महत्व

विस्तृत रूपरेखा :-

* प्रस्तावना।
* अनुशासन का शाब्दिक अर्थ।
* छात्र और अनुशासन।
* अनुशासन का दैनिक जीवन में लाभ।
* अनुशासित राष्ट्र :- विकसित राष्ट्र।
* उपसंहार।

BSE